दो वर्षीय डी. एल. एड. (फेस-टू-फेस) पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम की रूपरेखा

	विषय	मूल्यांकन			
	प्रथम वर्ष	Credit	बाह्य	आन्तरिक	कुल अंक
F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	4	70	30	100
F-2	बचपन और बाल विकास	4	70	30	100
F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	4	70	30	100
F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	4	70	30	100
F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	2	35	15	50
F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	2	35	15	50
F-7	गणित का शिक्षणशास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-9	Proficiency in English	2	35	15	50
F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	2	35	15	50
F-11	कला समेकित शिक्षा	4	40	60	100
F-12	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	4	40	60	100
SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम-1 (4 सप्ताह)	4	–	100	100
	कुल	**40**	**570**	**430**	**1000**

डी. एल. एड. प्रथम वर्ष

Pratik College of Education ★ Thenaha, Siwan ★

F-1 : समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ

इकाई–1 : बच्चे, बचपन और समाज

- बच्चे तथा बचपन : सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक समझ
- समाजीकरण की समझ : अवधारणा, कारक तथा विविध संदर्भ
- बच्चों का समाजीकरण : माता-पिता, परिवार, पड़ोस, जेण्डर एवं समुदाय की भूमिका
- बाल अधिकारों का संदर्भ : उपेक्षित वर्गों से आने वाले बच्चों पर विशेष चर्चा के साथ

इकाई–2 : विद्यालय और समाजीकरण

- शिक्षा, विद्यालय और समाज : अंतर्सम्बंधों की समझ
- विद्यालय में समाजीकरण की प्रक्रिया : विभिन्न कारकों की भूमिका व प्रभावों की समझ
- शिक्षा, शिक्षण तथा विद्यालय : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक आधार

इकाई–3 : शिक्षा और ज्ञान : विविध परिप्रेक्ष्यों की समझ

- शिक्षा : सामान्य अवधारणा, उद्देश्य एवं विद्यालयी शिक्षा की प्रकृति
- शिक्षा को समझने के विभिन्न आधार/दृष्टिकोण : दर्शनशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, शिक्षा का साहित्य, शिक्षा का इतिहास, आदि
- ज्ञान की अवधारणा : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
- ज्ञान के विविध स्वरूप एवं अर्जन के तरीके

इकाई–4 : प्रमुख चिंतकों के मौलिक लेखन की शिक्षाशास्त्रीय समझ

- महात्मा गाँधी-हिन्द स्वराज : सामाजिक दर्शन और शिक्षा के संबंध को रेखांकित करते हुए
- गिजुभाई बधेका-दिवास्वप्न : शिक्षा में प्रयोग के विचार को रेखांकित करते हुए
- रवीन्द्रनाथ टैगोर-शिक्षा : सीखने में स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता की भूमिका को रेखांकित करते हुए
- मारिया मांटेसरी-ग्रहणशील मन पुस्तक से 'विकास के क्रम' शीर्षक अध्याय : बच्चों के सीखने के सम्बन्ध में विशेष पद्धति को रेखांकित करते हुए
- ज्योतिबा फुले-हंटर आयोग (1882) को दिया गया बयान : शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक असमानता को रेखांकित करते हुए
- डॉ. जाकिर हुसैन-शैक्षिक लेख : बालकेन्द्रित शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए
- जे. कृष्णमूर्ति-'शिक्षा क्या है' : सीखने-सिखाने में संवाद की भूमिका को रेखांकित करते हुए
- जॉन डीवी-शिक्षा आरै लोक तंत्र से 'जीवन की आवश्यकता के रूप में शिक्षा' शीर्षक लेख : शिक्षा और समाज की अंतक्रिया को रेखांकित करते हुए

इकाई–5 : पाठ्यचर्या की समझ : बच्चों तथा समाज के संदर्भ में

- पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम : अवधारणा तथा विविध आधार
- बच्चों की पाठ्यपुस्तकें : शिक्षा, ज्ञान एवं समाजीकरण के माध्यम के तौर पर
- स्थानीय पाठ्यचर्या की समझ

पाठ्य-पुस्तकें

ED1038 समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ —केदारनाथ झा

F-2 : बचपन और बाल विकास

इकाई–1 : बचपन व बाल विकास की समझ

- बच्चे तथा बचपन : मनो-सामाजिक अवधारणा
- बचपन को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारक
- बाल विकास : अवधारणा, विकास के विविध आयाम, प्रभावित करने वाले कारक
- वृद्धि एवं विकास : अंतर्सम्बंधों की समझ, अध्ययन के तरीके

इकाई–2 : बच्चों का शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास

- शारीरिक विकास की समझ
- मनोगत्यात्मक विकास की समझ
- बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास की समझ

इकाई–3 : बच्चों में सृजनात्मकता

- सृजनात्मकता : अवधारणा, बच्चों के संदर्भ में विशेष महत्त्व
- बच्चों में सृजनात्मक विकास हेतु विविध तरीके
- सृजनात्मकता : प्रभावित करने वाले कारक

इकाई–4 : खेल और बाल विकास

- खेल से आशय : अवधारणा, विशेषता, बच्चों के विकास के संदर्भ में महत्त्व
- बच्चों के खेल : विविध प्रकार एवं संदर्भ
- बच्चों के विविध खेल : सीखने-सिखाने के माध्यम के रूप में

इकाई–5 : बच्चे और व्यक्तित्व विकास

- व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम : एरिक्सन के सिद्धांत का विशेष संदर्भ
- बच्चों में भावनात्मक/संवेगात्मक विकास का पहलू : जॉन बाल्बी का सिद्धांत एवं अन्य विचार
- नैतिक विकास और बच्चे : सही-गलत की अवधारणा, जीन पियाजे तथा कोहलबर्ग का सिद्धांत

पाठ्य-पुस्तकें

ED1039 बचपन और बाल विकास —ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी

F-3 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

इकाई– 1 : 'प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' की समझ

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : प्रमुख अवधारणाएँ
- ईसीसीई की आवश्यकता एवं उद्देश्य
- प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा का बच्चे के विकास एवं जीवन पर प्रभाव
- बच्चे कैसे सीखते हैं : बाल विकास की अवस्थाएँ (0-3, 3-6, 6-8 वर्ष), उप-अवस्थाएँ एवं सीखना

इकाई– 2 : प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के पाठ्यचर्या की समझ

- एक संतुलित तथा संदर्भयुक्त ईसीसीई पाठ्यचर्या की समझ
- ईसीसीई पाठ्यचर्या के लघु एवं दीर्घकालिक उद्देश्य तथा नियोजन
- गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियों/प्रक्रियाओं का चयन (उदाहरण- विषयवस्तु आधारित प्रक्रिया, प्रोजेक्ट विधि आदि)
- कक्षा में विकासोनुकूल, बाल केन्द्रित तथा समावेशी वातावरण निर्माण

इकाई– 3 : प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं विद्यालय की तैयारी

- प्राथमिक विद्यालयों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विस्तार का अर्थ एवं आधार
- प्रारंभिक वर्षों में प्रक्रियाओं के बाल केन्द्रित होने का अर्थ
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल एवं गतिविधियों के आयोजन का महत्त्व
- विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषा तथा गणितीय कौशल

इकाई– 4 : बच्चे की प्रगति का आकलन

- प्रारंभिक वर्षों में विकास के विभिन्न आयाम एवं अधिगम
- बच्चे की प्रगति के विभिन्न संकेतक एवं मानक
- बच्चे की प्रगति का अवलोकन व आकलन
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में बच्चे की प्रगति से संबंधित अभिलेखों का संधारण
- बच्चे की प्रगति में घर एवं विद्यालय की भूमिकाओं का अन्तर्संबंध
- विशेष आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चे तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

इकाई–5 : बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

- बिहार मे प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति
- राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को 8 वर्ष तक विस्तार देने का अर्थ
- राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियाँ एवं नवाचार
- राज्य में विद्यालय की तैयारी में संस्थाओं (अकादमिक व सामाजिक) से अपेक्षा

पाठ्य-पुस्तकें

ED1040 प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (प्राथमिक स्तर) –नूतन कुमारी

F-4 : विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास

इकाई–1 : विद्यालय संस्कृति और प्रबंधन

- विद्यालय संस्कृति के संगठनात्मक पहलू : अवधारणा, संरचना एवं घटकों की आलोचनात्मक समझ
- विद्यालय प्रबंधन की व्यवस्था और अंतर्निहित मान्यताएँ : विभिन्न घटक, कार्य संस्कृति, अनुशासन, समय प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, बाल संसद व मीना मंच की भूमिका
- विद्यालय के प्रबंधन से सम्बन्धित दस्तावेजों की समझ : विभिन्न रिकॉर्ड, संकलन एवं उपयोगिता
- विद्यालय में दिन की शुरुआत : चेतना सत्र की समझ

इकाई–2 : विद्यालय में परिवर्तन

- विद्यालय भवन का सृजनात्मक प्रयोग : सीखने सिखाने के माध्यम के रूप में
- शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत विद्यालयी व्यवस्था में परिवर्तन
- समावेशी शिक्षा के अनुरूप विद्यालय संगठन व प्रबंधन

- कला समेकित शिक्षा के माध्यम से विद्यालयी परिवेश एवं कक्षायी शिक्षण में बदलाव
- सूचना व संचार तकनीकी का शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग

इकाई–3 : विद्यालयी शिक्षण की व्यवस्थाएँ

- कक्षाकक्ष शिक्षण की प्रकृति : परम्परागत, बालकेन्द्रित, लोकतांत्रिक, सृजनात्मक, आदि
- कक्षाकक्ष संचालन : कक्षा की व्यवस्था, कक्षा में सम्प्रेशण एवं सीखने-सिखाने के विविध स्तर
- सीखने की योजना (लर्निंग प्लान) : अवधारणा, योजना निर्माण, क्रियान्वयन तथा स्वमूल्यांकन
- पाठ्य-सहगामी व सह-शैक्षिक क्रियायें : महत्त्व, योजना एवं क्रियान्वयन (गतिविधियाँ, कला, खेल इत्यादि)
- सीखने-सिखाने के दौरान आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ तथा अनुपूरक शिक्षण की व्यवस्था
- विद्यालय में आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था : सतत् एवं व्यापक आकलन, प्रगति पत्रक

इकाई–4 : शिक्षक वृत्तिक विकास (प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट) के आयाम

- शिक्षक वृत्तिक विकास : अवधारणा, आवश्यकता, नीतिगत विमर्श व सीमायें
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम : आवश्यकता, महत्त्व, प्रकार व स्वरूप
- विद्यालय में नेतृत्व व्यवस्था और शिक्षक : प्रशासनिक, सामूहिक, शिक्षणशास्त्रीय, परिवर्तनकारी
- शिक्षक तनाव प्रबंधन : अवधारणा, तनाव के कारण एवं निदान
- शिक्षक के वृत्तिक विकास में स्वाध्याय, लेखन व सहकर्मियों की भूमिका

इकाई–5 : महत्त्वपूर्ण शैक्षिक संस्थाएँ, प्रशिक्षण केन्द्र व सरकारी योजनाओं की समीक्षात्मक समझ

- विभिन्न संस्थाओं के कार्यों की समझ तथा विद्यालय के संदर्भ में उपयोगिता :
  - निकटवर्ती जिला स्तरीय संस्थाएँ : संकुल संसाधन केन्द्र (CRC), प्रखण्ड संसाधन केन्द्र (BRC), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), प्रारम्भिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (PTEC)
  - राज्य स्तरीय संस्थाएँ : राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT), बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् (BEPC), बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड (BSEB), बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड (BSSB), बिहार राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड (BSMEB), बिहार मुक्त विद्यालयी शिक्षण एवं परीक्षा बोर्ड (BBOSE)
  - राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएँ : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (NUEPA), राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (NCTE)
  - अन्तर्राष्ट्रीय एवं गैर सरकारी संस्थाएँ : यूनिसेफ (UNICEF), वर्ल्ड बैंक (World Bank) व अन्य गैर सरकारी संस्थाएँ

Pratik College of Education, Thepaha, Siwan

- शैक्षिक योजनायों से प्रमुख पहलुओं से परिचय तथा विद्यालय के संदर्भ में उपयोगिता :
  - सर्व शिक्षा अभियान (SSA)
  - राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)
  - समेकित बाल विकास योजना (ICDS)
  - बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली विशेष योजनाएँ
  - उपेक्षित वर्ग के बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली विशेष योजनाएँ

पाठ्य-पुस्तकें

ED1041 विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास —सुप्रिया सोनी

F-5 : भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास

इकाई–1 : भाषा की प्रकृति

- भाषा का अर्थ
- भाषा–प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था के रूप में,
  –समझ के माध्यम के रूप में,
  –संप्रेषण के माध्यम के रूप में
- मानव भाषा और पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों की भाषा में अंतर
- भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था : ध्वनि संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना, प्रोक्ति (संवाद) संरचना
- भाषा की विशेषताएँ

इकाई–2 : भाषायी विविधता व बहुभाषिकता

- भारत का बहुभाषिक परिदृश्य : भारत में भाषाएँ एवं भाषा-परिवार
- बिहार का बहुभाषिक परिदृश्य
- भाषा और बोली
- बहुभाषिकता के आयाम : बौद्धिक आयाम, शिक्षणशास्त्रीय आयाम
- भाषाओं के संदर्भ में संवैधानिक प्रावधान : अनुच्छेद 343-351, आठवीं अनुसूची
- बहुभाषिक कक्ष और केस स्टडी

इकाई–3 : बच्चों का आरम्भिक भाषा विकास और विद्यालय में भाषा

- बच्चों के भाषा सीखने की क्षमता तथा बच्चों के भाषाई ज्ञान को समझना –विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषायी पूँजी
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ? (स्किनर, चॉमस्की, वायगोत्स्की और पियाजे के विशेष संदर्भ में)
- भाषा अर्जित करने और भाषा सीखने में अंतर
- विद्यालय में भाषा–विषय के रूप में–माध्यम भाषा के रूप में
- भाषा सीखने-सिखाने के उद्देश्यों की समझ : कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, संवेदनशीलता

- भाषा के आधारभूत कौशलों–सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखने का विकास–शुरुआती पढ़ना-लिखना
- लिपि और भाषा

पाठ्य-पुस्तकें

ED1042 भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास —पंकज कुमार

F-6 : शिक्षा में जेण्डर और समावेशी परिप्रेक्ष्य

इकाई–1 : समावेशी शिक्षा की समझ

- भारतीय समाज में समावेशन और अपवर्जन के विभिन्न रूप (हाशिए का समाज, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे-दिव्यांगजन)
- कक्षाओं में विविधता और असमानता की समझ : पाठ्यचर्यात्मक और शिक्षणशास्त्रीय संदर्भ
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति एवं प्रक्रिया

इकाई–2 : विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (दिव्यांगजन) और समावेशी शिक्षा

- समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का संदर्भ : ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, बिहार का संदर्भ
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे : विविध प्रकार, पहचान के तरीके व सीमाएँ
- समावेशी कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सीखने के लिए शिक्षा का स्वरूप

इकाई–3 : जेण्डर विमर्श और शिक्षा

- जेण्डर : अवधारणा और संदर्भ, पितृसत्ता व नारीवादी विमर्श के संदर्भ में जेण्डर विभेद
- बच्चों के समाजीकरण में जेण्डर की भूमिका : बचपन, परिवार, समुदाय, मीडिया
- शिक्षा व्यवस्था व विद्यालय में प्रचलित जेण्डर विभेद : पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षायी प्रक्रियाओं, विद्यार्थी-शिक्षक (स्टूडेंट-टीचर इन्टरैक्शन) संवाद के विशेष संदर्भ में
- जेण्डर संवेदनशीलता और समानता में शिक्षा की भूमिका

पाठ्य-पुस्तकें

ED1043 शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य —प्रतिमा त्रिपाठी

F-7 : गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)

इकाई–1 : गणित की समझ

- गणित के बारे में भय, भ्रम और मिथक : गणित सबके लिए

- दैनिक जीवन में गणित : आवश्यकता एवं महत्त्व
- गणित की प्रकृति
- गणितीयकरण

इकाई–2 : प्राथमिक स्तर पर गणित : आधार, उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम

- गणित सीखने-सिखाने के विविध आधार :
  - बच्चों की गणितीय समझ एवं अनुभव
  - बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य की समझ
  - गणित एवं संज्ञानात्मक विकास
- प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने के उद्देश्य : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008, एन.सी.एफ.टी.ई.-2009, गणित आधार पत्र-2006 (एन.सी.ई.आर.टी.) के विशेष संदर्भ में
- बिहार के प्राथमिक स्तर के गणित का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

इकाई–3 : संख्या एवं संख्या संक्रियाएँ

- संख्यापूर्व अवधारणाओं का विकास
- संख्या की अवधारणा की समझ
- गिनती से परिचय
- संख्या प्रत्यय की समझ का विकास एवं विभिन्न संकेतों के माध्यम से संख्याओं की प्रस्तुति
- स्थानीय मान
- गणितीय संक्रियाएँ एवं उनमें अन्तर्संबंध

इकाई–4 : मापन एवं आँकड़े

- मापन का अर्थ
- मापन और अनुमान
- अमानक एवं मानक इकाइयाँ
- मापन के दौरान होने वाली गलतियाँ
- लम्बाई, क्षेत्रफल, धारिता, आयतन तथा समय का मापन
- आँकड़ों का प्रत्यय तथा प्रस्तुतीकरण

पाठ्य-पुस्तकें

ED1044	गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	–राजेन्द्र शर्मा

F-8 : हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर)

इकाई–1 : प्राथमिक स्तर पर हिन्दी : प्रकृति एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य

- बच्चों की दुनिया में हिन्दी
- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्राथमिक स्तर की हिन्दी की समझ
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 के आलोक में हिन्दी भाषा के उद्देश्यों को समझना

Pratik College of Education ★ Thenah, Siwan ★

इकाई–2 : प्राथमिक स्तर की हिन्दी : पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समझ

- बिहार के प्राथमिक स्तर की हिन्दी के पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम के उद्देश्य
- प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम की संरचना
- प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्पुस्तकों एवं अभ्यास प्रश्नों की प्रकृति की समझ

इकाई–3 : भाषायी क्षमताओं का विकास : सुनना व बोलना

- भाषायी क्षमताओं की संकल्पना : विभिन्न भाषायी क्षमताएँ और उनके बीच आपसी संबंध
- सुनने व बोलने का अर्थ
- सुनने व बोलने को प्रभावित करने वाले कारक
- प्राथमिक स्तर के बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास : बच्चों को कक्षा में सुनने व बोलने के मौके उपलब्ध करवाना, जैसे–आज की बात, बातचीत, अपने बारे में बात करना, स्कूल अनुभवों पर बात करना, आँखों देखी या सुनी हुई घटनाओं के बारे में अभिव्यक्ति करना, बालगीत/कविता सुनना-सुनाना, कहानी सुनना-सुनाना, चित्र-वर्णन, दिए गए शब्दों से कहानी सुनाना, रोल प्ले करवाना, सुने हुए विचारों को संक्षिप्त व विस्तारित कर पाना, परिचित सम-सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करना, बच्चों को कहानी, कविता, नाटक आदि रचने, उसे बढ़ाने तथा प्रस्तुत करने के अवसर देना (कविताओं, कहानियों व बालगीतों आदि के उदाहरण प्रारम्भिक कक्षाओं की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों से भी लिए जाएँ)
- भाषा सीखने के संकेतक : सुनने और बोलने के संदर्भ में

इकाई–4 : पढ़ने की क्षमता का विकास

- पढ़ने का अर्थ : शुरुआती पढ़ना क्या है, शुरुआती 'पढ़ना' की चरणबद्ध प्रक्रिया को समझना
- पढ़ने की प्रक्रिया और विभिन्न सोपानों में अनुमान लगाने, अर्थ समझने, लिपि पहचानने, पढ़कर प्रतिक्रिया देने, पढ़कर सार प्रस्तुत करने का तात्पर्य और महत्त्व
- पढ़ने के प्रकार : सस्वर, मौन पठन, गहन पठन, विस्तृत पठन, शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पढ़ना, 'स्किप रीडिंग, स्कैन रीडिंग' आदि
- पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके और उनकी समीक्षात्मक समझ : वर्ण विधि, शब्द विधि, वाक्य विधि, अर्थपूर्ण संदर्भ आधारित उपागम
- पढ़ना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की भूमिका
- भाषा सीखने के संकेतक : पढ़ने के संदर्भ में

पाठ्य-पुस्तकें

ED1045	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	–अल्पना कुमारी

F-9 : PROFICIENCY IN ENGLISH

Unit–1 : Need and importance of English Language

- English as a global language
- English around us

- Constitutional provision : English as an associate official language
- Proficiency vs. achievement in English

Unit-2 : Developing Oral skills (Listening and Speaking)

- Importance of listening and speaking in acquiring proficiency in English
- Identification and production of distinctive sounds in English : Syllable, Stress, intonation and rhythm
- Recognizing words in various contexts
- Identifying meaning/gist, identifying emotions/feelings in an utterance
- Producing language in acceptable forms : Conveying information, Formulating an appropriate response
- Presentation skill.

Unit-3 : Developing Reading and Writing skills

A. Reading:

- Study Skill
- Reading for local and global comprehension (including inferences and extrapolation)
- Extensive and intensive reading
- Skimming and scanning

B. Writing:

The focus of this section will be developing writing skills in the following:

- Mechanics of writing : strokes, curves, proper shape , size and spacing
- Writing messages, descriptions, reports, notices, applications, letter, invitations, posters, slogans
- Writing a paragraph having coherence, cohesion and unity.

Unit-4 : Vocabulary Enrichment and Grammar in Context

A. Vocabulary :

- Words around us (list of active and passive words to be identified, including phrasal verbs and idioms) using them in different contexts
- Content words and function words
- Antonyms, synonyms, homophones, homonyms
- Word formation (using prefixes and suffixes etc)

B. Grammar in Context :

- Need and importance of Grammar : Notion of correctness vs notion of appropriateness
- Traditional grammar vs Grammar in Context
- Grammatical items : Types of sentences, Time and tense, Parts of speech, subject verb agreement, transformation of sentences (including voices, direct and indirect speech etc), linkers, modals, prepositions and prepositional phrases

पाठ्य-पुस्तकें

EDG96 Proficiency in English —Hena Siddiqui

F-10 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र

इकाई–1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

- प्रकृति एवं क्षेत्र
- उद्देश्य एवं महत्त्व

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 के संदर्भ में पर्यावरण अध्ययन
- पर्यावरण अध्ययन एकीकृत रूप में (एकीकृत उपागम)
- प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन का संयोजन व विस्तार : पर्यावरणीय प्रकरण (थीम) के प्रमुख आधार परिवार एवं मित्र, जल, भोजन, आवास, यात्रा, वस्तुओं का निर्माण एवं व्यवहार

इकाई–2 : पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में हमारा एवं बच्चों का परिवेश

- बच्चों के परिवेश सम्बन्धी अनुभव, शिक्षण के आधार के रूप में।
- परिवेश की विविधता की समझ।
- अपने परिवेश से अन्य परिवेशों की तुलना
- परिवेश सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह एवं विश्लेषण

Pratik College of Education, Thepaha, Siwan

इकाई–3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र (शिक्षण–अधिगम विधियाँ)

- खोज/अन्वेषण विधि
- प्रोजेक्ट विधि
- परिभ्रमण एवं सर्वेक्षण विधि
- प्रयोग विधि
- गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम
- सामूहिक क्रियाकलाप
- प्रदर्शनी/चर्चा एवं संवाद आधारित विमर्श

इकाई–4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका तथा आकलन एवं मूल्यांकन

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में शिक्षक की भूमिका
- कक्षा के बाहर और भीतर गतिविधियों का आयोजन एवं संगठन
- कैसे जुटाएँ सामग्रियाँ
- आकलन–अपने अध्यापन कार्य का विश्लेषण एवं सुधार का आधार
  –विद्यार्थियों के कार्यों का बहुआयामी आकलन
  –सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया
  –सीखने के संकेतकों की समझ
  –आकलन सम्बन्धी सूचनाओं का इस्तेमाल : रिपोर्टिंग और फीडबैक

पाठ्य-पुस्तकें

ED1046 पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र —दीप्तांशु भास्कर

F-11 : कला समेकित शिक्षा

इकाई–1 : कला समेकित शिक्षा की समझ

- कला शिक्षा एवं कला समेकित शिक्षा की समझ
  –कला क्या है
  –कला शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
  –कला समेकित शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व

- समकालीन क्षेत्रीय कलाओं, कलाकारों एवं कारीगरों से परिचय
- 'कला शिक्षा' से 'कला समेकित शिक्षा' की ओर : अवधारणात्मक समझ
  —बाल कला की समझ
  —बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में कला समेकित शिक्षा की भूमिका
  —प्रारंभिक स्तर की पाठ्यचर्या से कला समेकित शिक्षा का जुड़ाव

इकाई–2 : दृश्य कला

- दृश्य कलाएँ : अवधारणात्मक समझ एवं शैक्षिक उपयोगिता
- दृश्य कला सम्बन्धी कला अनुभव
- दृश्य कलाओं के विविध प्रकार एवं सम्बन्धित सामग्री से परिचय एवं विकास : यथा-चित्र बनाना, मुखौटा, मिरर इमेज, कागज एवं कबाड़ से सामग्री निर्माण

इकाई–3 : प्रदर्शन कला

- प्रदर्शन कला : अवधारणात्मक समझ एवं उपयोगिता
- प्रदर्शन कला सम्बन्धी कला अनुभव
- प्रदर्शन कला के विविध प्रकार एवं उनकी तैयारी :
  —वाचन, सृजनात्मक लेखन एवं सम्प्रेषण कला
  —संगीत, गायन एवं नृत्य : लोक, शास्त्रीय एवं समकालीन
  —परछाईं से रोचक स्वरूपों को गढ़ना
  —नाटक मंचन के विविध स्वरूप
- 'शिक्षा में रंगमंच' की अवधारणात्मक समझ तथा उपयोगिता

इकाई–4 : कला अनुभव का शिक्षण में सृजनात्मक प्रयोग

- 'सीखने की योजना' और कला समेकित शिक्षा : प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियाँ
- विभिन्न कला सामग्रियों का शिक्षण में प्रयोग : विषयों की विषयवस्तु के संदर्भ में सीखने की योजना एवं क्रियान्वयन
- विद्यालय के भवन, जगह, समय और गतिविधि में कला अनुभव के समावेश के तरीके
- सीखने-सिखाने में कला अनुभव के प्रभावी समावेश हेतु शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका

इकाई–5 : कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन

- कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन : अवधारणात्मक समझ, बच्चों के सह-शैक्षिक (को-स्कोलास्टिक) मूल्यांकन में भूमिका, क्रियान्वयन के दौरान याद रखे जाने वाले प्रमुख बिन्दु
- आकलन एवं मूल्यांकन के संकेतक : अर्थ, दृश्य कला एवं प्रदर्शन कला के संदर्भ में
- कला में मूल्यांकन के विभिन्न उपागमों एवं तकनीकों की समझ : अवलोकन (आब्जर्वेशन) सूची, परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो, चेक लिस्ट, रेटिंग स्केल, घटना वृत्तांत (ऐनकडोटल रिकॉर्ड), प्रदर्शन (डिस्प्ले व प्रेजेंटेशन) आदि
- आकलन एवं मूल्यांकन को सम्प्रेषित एवं प्रस्तुत करने के विविध तरीके

पाठ्य-पुस्तकें

ED1047 कला समेकित शिक्षा —अनिता कुमारी

F-12 : शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.)

इकाई–1 : शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी का परिचय

- सूचना तथा संचार तकनीकी की अवधारणा तथा समझ
- सूचना एवं संचार तकनीकी के विभिन्न अवयव
- शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की उपयोगिता एवं महत्व
- समावेशी शिक्षा के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी

इकाई–2 : सूचना एवं संचार तकनीकी के विविध उपकरण

- शिक्षण-अधिगम में ऑडियो वीडियो, मल्टीमीडिया साधनों की महत्ता तथा उपयोग
- कम्प्यूटर एवं मोबाइल (हैण्डहेल्ड उपकरण) का संक्षिप्त परिचय
- कम्प्यूटर के विभिन्न प्रकार एवं घटक
- कम्प्यूटर : स्मृति, भंडारण एवं क्लाउड स्टोरेज
- सॉफ्टवेयर के प्रकार
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कम्प्यूटर एवं मोबाइल की भूमिका

इकाई–3 सूचना एवं संचार तकनीकी के अन्तर्गत ऑफिस ऑटोमेशन का अनुप्रयोग

- वर्ड प्रोसेसर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- स्प्रेडशीट : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- प्रेजेन्टेशन सॉफ्टवेयर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- कुछ अन्य उपयोगी सॉफ्टवेयर

इकाई–4 शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इंटरनेट

- इंटरनेट : उपयोगिता, शैक्षिक महत्व एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में उपयोग
- विभिन्न प्रकार के ब्राउजर, सर्च इंजन एवं उनकी उपयोगिता
- ई-मेल, सोशल नेटवर्किंग एवं इंटरनेट उपयोग में सुरक्षा मूल्य तथा सिद्धांत
- ई-लर्निंग एवं ओपन लर्निंग सिस्टम
- ओ.ई.आर (ओपन एजुकेशन रिसोर्सेज) : समझ, स्रोत एवं शिक्षण अधिगम में उनका उपयोग

इकाई–5 : प्राथमिक स्तर के विषयों के शिक्षण में आई.सी.टी. का उपयोग

- सीखने की योजना एवं विद्यालय के अन्य कार्य के साथ आई.सी.टी. का एकीकरण
- भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन में आई.सी.टी. संसाधन का प्रयोग
- मूल्यांकन में आई.सी.टी. का महत्व एवं उपयोग

पाठ्य-पुस्तकें

ED1048 शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी —रविन्द्र कुमार

Pratik College of Education ★ Thepa, Siwan ★